संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2082 | वर्ष : 2025

हिन्दी मासिक

अंक : मार्च (द्वितीय)

दर्शन करके लौटते समय उसकी दृष्टि एक महात्मा पर पड़ी , जो मंदिर के एक कोने में व्याघ्राम्बर पर पध्मासन लगाये बैठे थे । उनके मुख से निरन्तर 'नारायण -नारायण शब्द का प्रवाह चल रहा था । उनका चेहरा एक अपूर्व ज्योति से जगमगा रहा था...

भक्त नरसी मेहता चरित

पुण्यभूमि आर्यावर्त के सौराष्ट्र -प्रांत में जीर्णोदुर्ग नामक एक अत्यंत प्राचीन ऐतिहासिक नगर है , जिसे आजकल जूनागढ कहते है । भक्त प्रवर श्री नरसिंह मेहता का जन्म लगभग संमवत चौदह सौ सतर में इसी जूनागढ में एक प्रतिष्ठित नागर ब्रह्ममण -परिवार में हुआ था । उनके पिता का नाम था कृष्ण दामोदर दास तथा माता का नाम लक्ष्मीगौरी था, उनके एक और बड़े भाई थे , जिनका नाम था वणसीधर या वंशीधर। अभी वंशीधर की उम्र बाईस वर्ष और नरसिंह राम की पाँच वर्ष लगभग थी कि उनके माता -पिता का देहांत हो गया और उसके बाद नरसिंह राम का लालन -पालन बड़े भाई तथा दादी ने किया । दादी का नाम था जयकुँवरी।

नरसिंह राम बचपन से गूँगे थे ; प्रायः आठ वर्ष की उम्र तक उनका कण्ठ नहीं खुला। इस कारण लोग उन्हें "गूँगा' कहकर पुकारने लगे। इस बात से उनकी दादी जयकुवँरी को बड़ा कलेश (दुःख) होता था। वह बराबर इस चिन्ता में रहती थी कि मेरे पौत्र की जबान कैसे खुले। परंतु मूक को वाचाल कौन बनावे, पंगु को गिरिवर लाँघने की शक्ति कौन दे? जयकुँवरी को पूरा विश्वास था , ऐसी शक्ति केवल एक परम पिता परमेश्वर ही है ; उनकी दया होने पर मेरा पौत्र भी तत्काल वाणी प्राप्त कर सकता है और साथ ही यह भी उसे विश्वास था कि उन दयामय जगन्नाथ की कृपा साधारण मनुष्यों को उनके प्रिय भक्तों के द्वारा ही प्राप्त हुआ करती है। अतएव स्वाभावतः ही उसमें साधु -महात्माओं के प्रति श्रद्धा और आदर का भाव था । जब और जहाँ उसे कोई साधु-महात्मा मिलते , वह उनके दर्शन करती और यथाशक्ति श्रद्धा पूर्वक सेवा भी करती।

कहते है श्रद्धा उत्कट होने पर एक न एक दिन फलवती होती ही है । आखिर जयकुँवरी की श्रद्धा भी पूरी होने का सुअवसर आया। फाल्गुन शुक्ल पंचमी का दिन था। ऋतुराज का सुखद साम्राज्य जगत भर में छा रहा था । मन्द-मन्द वसन्त वायु सारे जगत के प्राणियों में नव जीवन का संचार कर रहा था । नगर के नर -नारी प्रायः नित्य ही सायंकाल हाटकेशवर महादेव के दर्शन के लिए एकत्र हुआ करते; स्त्रियाँ मंदिर में एकत्र होकर मनोहर भजन तथा रास के गीत गाया करती । नित्य की तरह उस दिन भी अत्याधिक भीड़ थी । जयकुँवरी भी नाती को साथ लेकर हाटकेशवर महादेव के दर्शन को गयी ।

दर्शन करके लौटते समय उसकी दृष्टि एक महात्मा पर पड़ी , जो मंदिर के एक कोने में व्याघ्राम्बर पर पध्मासन लगाये बैठे थे । उनके मुख से निरन्तर 'नारायण -नारायण शब्द का प्रवाह चल रहा था । उनका चेहरा एक अपूर्व ज्योति से जगमगा रहा था । देखने से ही ऐसा मालूम होता था जैसे कोई परम सिद्ध योगी हों। उनकी दिव्य तपो पलब्ध प्रतिभा से आकृष्ट होकर जयकुँवरी भी अपने साथ की महिलाओं के संग उनके दर्शन करने के लिए गयी । उसने दूर से बड़े आदर और भक्ति के साथ महात्मा जी को प्रणाम किया और हाथ जोड़कर विनती की| महात्मन ! यह बालक मेरा पौत्र है ; इसके माता -पिता का देहांत हो चूका है । प्रायः आठ वर्ष का यह होने चला , पर कुछ भी बोल नहीं सकता । इसका नाम नरसिंह राम है; परंतु सब लोग इसे गूँगा कहकर ही पुकारते है । इससे मुझे बड़ा कलेश होता है । महाराज ! ऐसी कृपा किजीये कि इस बालक की वाणी खुल जाय । क्रमशः .....!

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

विज्ञापन
संजीव कुमार सिन्हा

प्रसार व्यवस्था
देवेन्द्र नारायण

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस, शशि काम्प्लेक्स, नाला रोड, कदमकुआँ पटना

पता
104-105, विश्व संवाद केंद्र
सुर्या अपार्टमेंट, फ्रेजर रोड,
पटना
पिन नंबर- 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

बिहार की इस बेटी ने गांव वालों का तोड़ा घमंड 05

मुस्लिम संगठनों द्वारा नीतीश कुमार के विरुद्ध फतवा 06

भारतीय संस्कृति में प्रतिपदा का महत्व 07

पुनर्जागरण के पुरोधा : डॉ. हेडगेवार 09

राजेंद्र बाबू और पंडित नेहरू : अनसुलझे रिश्ते 13

हिंदुओं की छाती में घुसा नेज़ा
(भाला) योगी जी ने निकाल दिया 15

फतवों से परेशान बिहार 16

झाड़-फूंक के नाम पर धर्म परिवर्तन का खेल 18

क्योंकि ये दलित मुस्लिम अत्याचार के शिकार थे 19

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो की संवाद दर्शन पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई-मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करते हैं कि पत्रिका आपके हाथों तक पहुंच रही होगी यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते है।

शेष शुभ!

बिहार बोर्ड इंटर टॉपर्स की कहानी

बिहार बोर्ड इंटर परीक्षा का रिजल्ट 25 मार्च को जारी किया गया, जिसमें कुल 86.56 प्रतिशत छात्र-छात्राओं ने सफलता हासिल की. इस बार तीनों स्ट्रीम साइंस, आर्ट्स और कॉमर्स में लड़कियों ने झंडे गाड़ दिए. साइंस स्ट्रीम में जहां प्रिया जायसवाल ने तो आर्ट्स स्ट्रीम में अंकिता कुमारी और शाकिब शाह, जबकि कॉमर्स स्ट्रीम में रौशनी कुमारी ने टॉप किया है. इन टॉपर्स की सफलता इसलिए ज्यादा महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये बेहद ही साधारण परिवार से आते हैं, जिसमें किसी के पिता किसान हैं तो किसी के सिक्योरिटी गार्ड का काम करते हैं. आइए जानते हैं कि बिहार बोर्ड 12वीं के टॉपर्स के बारे में.

टॉपर प्रिया जायसवाल की कहानी : प्रिया जयसवाल न सिर्फ साइंस स्ट्रीम की टॉपर हैं बल्कि उन्होंने तीनों स्ट्रीम में ओवरऑल टॉप किया है यानी वह पूरे बिहार की इंटर टॉपर हैं. उन्होंने परीक्षा में कुल 96.8 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, प्रिया के पिता संतोष जायसवाल एक किसान हैं, जबकि उनकी मां रीमा देवी हाउसवाइफ हैं. पश्चिम चंपारण जिले की रहने वाली प्रिया बताती हैं कि वह रोज 8 घंटे पढ़ाई करती थीं, जिसका फल अब उन्हें टॉपर के रूप में मिला है. इससे पहले वह मैट्रिक की परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन कर चुकी हैं. तब उन्होंने 8वां स्थान प्राप्त किया था.

कौन हैं साइंस स्ट्रीम के सेकंड टॉपर? : बिहार बोर्ड इंटर के साइंस स्ट्रीम में आकाश कुमार ने दूसरा स्थान हासिल किया है यानी वह साइंस स्ट्रीम के सेकंड टॉपर हैं. अरवल जिले के रहने वाले आकाश ने 96 फीसदी यानी कुल 480 अंक हासिल किए हैं. रिपोर्ट्स के मुताबिक, उनके पिता सिक्योरिटी गार्ड का काम करते हैं. आकाश कुमार शुरुआत से ही पढ़ाई में होनहार हैं. इससे पहले मैट्रिक बोर्ड परीक्षा में भी उन्होंने अपने जिले में टॉप किया था.

किसान हैं अंकित के पिता : अंकित कुमार ने बिहार बोर्ड इंटर के साइंस स्ट्रीम में टॉप-5 में बनाई है. उन्होंने परीक्षा में 95.2 फीसदी यानी कुल 476 अंक हासिल करते हुए पांचवां स्थान हासिल किया है. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अंकित के पिता मोहन कुमार झा एक किसान हैं, जबकि उनका मां हीरा कुमारी हाउसवाइफ हैं. अंकित बताते हैं कि वह आईआईटी में एडमिशन लेना चाहते हैं और इंजीनियर बनना चाहते हैं.

क्या करते हैं आर्ट्स टॉपर्स के पिता? : आर्ट्स स्ट्रीम में अंकिता कुमारी और शाकिब शाह ने संयुक्त रूप से टॉप किया है. अंकिता जहां वैशाली जिले की रहने वाली हैं तो शाकिब बक्सर के रहने वाले हैं. दोनों टॉपर्स को संयुक्त रूप से 94.6 फीसदी यानी कुल 473 अंक हासिल किए हैं. जानकारी के मुताबिक, अंकिता के पिता अनिल कुमार शर्मा एक बाइक मैकेनिक हैं, जबकि शाकिब के पिता मोहम्मद शमीम एक सरकारी शिक्षक हैं.

(साभार : TV 9 भारतवर्ष)

उन्हें ये पता था कि गांव में रहकर प्रिय को काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा इसलिए वे उनकी पढ़ाई के लिए उन्हें पटना ले गए. साथ ही प्रिया के पापा ने भी अपनी बेटी की मेहनत और लग्न को देखते हुए हमेशा उनका समर्थन किया...

बिहार की इस बेटी ने गांव वालों का तोड़ा घमंड पढ़ने से रोका तो UPSC क्रैक कर बनी IAS अफसर

बेटियों के लिए आज के समय में भी दुनिया इतनी आसान नहीं है. आज भी हमारे देश में ऐसी कई जगहें हैं जहां बेटियों को पढ़ाया नहीं जाता, या उन्हें हमेशा घर की चार दिवारी के अंदर ही रखा जाता है. ये सच है कि बीते दशकों में बेटियों के बारे लोगों के विचार खुले तो हैं लेकिन आज भी आपको कई ऐसे मामले देखने को मिलेंगे जहां बेटियों को छोटी से छोटी चीजों के लिए परिवार, समाज, गांव सब से लड़ना पड़ता है. आज हम आपको ऐसी ही एक कहानी बताएंगे बिहार के फुलवारी शरीफ के छोटे से गांव कुड़कुरी की रहने वाली प्रिया रानी की जिन्होंने पढ़ाई से रोके जाने और समाज की बंदिशों का सामना करते हुए यूपीएससी की परीक्षा पास की आईएएस अफसर बन गई.

गांव वालों ने पढ़ने से रोका लेकिन दादा ने दिया साथ : प्रिया बिहार के एक छोटे से गांव कुड़कुरी से आती हैं. बचपन से ही उनकी पढ़ाई गांव में हुई और इस बीच उन्हें अपने गांव वालों का काफी विरोध झेलना पड़ा. गांव वाले इस बात से खुश नहीं थे कि प्रिया के परिवार वाले अपनी बेटी को इतना पढ़ा रहे हैं लेकिन प्रिया के दादा जी ने गांव वालों की एक न सुनी और अपनी पोती की पढ़ाई के लिए वे सब से लड़ गए. उन्हें ये पता था कि गांव में रहकर प्रिय को काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा इसलिए वे उनकी पढ़ाई के लिए उन्हें पटना ले गए. साथ ही प्रिया के पापा ने भी अपनी बेटी की मेहनत और लग्न को देखते हुए हमेशा उनका समर्थन किया. प्रिया ने पटना में एक किराए के घर में रहकर अपनी पढ़ाई पूरी की थी.

बीआईटी मेसरा से की इंजीनियरिंग : प्रिया ने बीआईटी मेसरा से इंजीनियरिंग की, इसके बाद उन्हें अच्छी पैकेज वाली जॉब भी मिली लेकिन उन्हें सिविल सर्विस में जानें का जुनून था. प्रिया ने इंजीनियरिंग खत्म होते ही यूपीएससी की तैयारी शुरू कर दी. प्रिया ने अपने दूसरे प्रयास में इंडियन डिफेंस सर्विस में नौकरी हासिल की लेकिन उनका सपना आईएएस बनने का था, इसके बाद उन्होंने अपना तीसरा अटेम्प्ट दिया लेकिन उसमें वह असफल हो गई लेकिन तब भी वह रुकी नहीं. इसके बाद उन्होंने अपने चौथे प्रयास में ऑल इंडिया रैंक 69 हासिल की और आखिरकार वह आईएएस अधिकारी बन गई.

रोज सुबह 4 बजे उठकर की पढ़ाई : प्रिया ने मीडिया से बातचीत करते हुए अपनी स्ट्रेटजी और पढ़ने का तरीका बताया. उन्होंने बताया कि सफलता के लिए नियमित पढ़ाई और मेहनत के अलावा दूसरा और कोई विकल्प नहीं है. वह रोज सुबह 4 बजे उठकर पढ़ाई करती थी. प्रिया का मानना है कि पढ़ाई ही जिंदगी की सबसे बड़ी संपत्ति है.

जो गांव वाले करते थे विरोध, आज करते हैं वाहवाही : प्रिया के गांव वाले जो एक समय पर उन्हें पढ़ने से रोकते थे और उनके परिवार का विरोध करते थे आज वे सब प्रिय की वाहवाही करते हैं. प्रिया ने किए कमाल के बाद उनके गांव वाले सहित आस पास के गांव वाले भी अपनी बेटियों को पढ़ाने के लिए एकजुट हो गए हैं. प्रिया की कामयाबी ने पूरे समाज में एक परिवर्तन लाया है और उनकी सफलता पर न सिर्फ उनके परिवार या गांव बल्कि पूरे बिहार को नाज है. (साभार : प्रभात खबर)

आजादी के 60 साल तक एक साधारण हिन्दू, जिन्हें 'हिन्दू रेट ऑफ ग्रोथ' कहकर अपमानित किया गया – वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत रहा। उसने आठवीं शताब्दी से इस्लामी आक्रांताओं के सतत मजहबी हमले झेले...

मुस्लिम संगठनों द्वारा नीतीश कुमार के विरुद्ध फतवा जारी

बिहार में आए दिन किसी ने किसी बात पर फतवे जारी होते रहते हैं। कुछ फतवे सुर्खियों में रहते हैं तो कुछ फतवे नजरअंदाज कर दिए जाते हैं। राजीव गांधी मंत्रिमंडल के समय शाहबानो केस के विरुद्ध फतवों की राजनीति बिहार से ही शुरू हुई थी। न सिर्फ स्थानीय बल्कि राष्ट्रीय स्तर के कई विषयों पर यहां फतवे जारी किए गए हैं। उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने की बात हो या फिर सीएए का मुद्दा, वक्त बिल का मसला हो या तीन तलाक का ; इन सभी विषयों पर फतवे जारी किए गए हैं।

इन सभी फतवों में इमारत-ए-सरिया की अहम भूमिका होती है। इस बार इमारत-ए-सरिया के नेतृत्व में सात मुस्लिम संगठनों ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा आयोजित इफ्तार पार्टी का विरोध किया है। इमारत-ए-सरिया ने इस इफ्तार पार्टी के विरोध में फतवा भी जारी किया है। इन सात संगठनों में जमात-ए-इस्लाम, जमात-ए-अहले हदीस, खानकाह मुजीबिया, मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, जमियत उलेमा ए हिंद और खानकाह रहमानी शामिल है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार प्रतिवर्ष इफ्तार पार्टी का आयोजन करते हैं। इस वर्ष यह इफ्तार पार्टी 23 मार्च, 2025 को आयोजित थी। मुख्यमंत्री द्वारा वक्फ़ संशोधन विधेयक, 2024 पर खिलाफत नहीं करने के कारण बिहार के मुस्लिम संगठनों ने उन्हें एक प्रकार से धमकी देते हुए फतवा जारी किया। जारी पत्र में बताया गया है कि नीतीश कुमार ने बिहार की जनता से धर्मनिरपेक्ष शासन और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा का वादा करके सत्ता प्राप्त की थी। लेकिन भाजपा के साथ उनका गठबंधन और इस अतार्किक और असंवैधानिक कानून का समर्थन उन प्रतिबद्धताओं के खिलाफ जाता है।

कथित अशंकाओं के बारे में चर्चा भी इस फ़तवे में है। उसके अनुसार यदि वक़्फ़ संशोधन विधेयक, 2024 लागू हुआ तो यह शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला आश्रयों और धार्मिक स्थलों के लिए समर्पित सदियों पुराने वक्फ संस्थानों को नष्ट कर देगा। इससे मुस्लिम समुदाय और अधिक वंचित और गरीब हो जाएगा, जैसा कि सच्चर समिति की रिपोर्ट में पहले ही चेतावनी दी गई थी। आपकी सरकार द्वारा मुसलमानों की चिताओं की उपेक्षा ऐसे औपचारिक आयोजनों को अर्थहीन बना देती है।

विवादों में रहा है इमारत-ए- शरिया : इस संगठन की कोई विशेष पहचान गैर मुसलमानों के बीच नहीं थी लेकिन 15 अप्रैल, 2018 को इसने पटना के गांधी मैदान में एक बड़ी रैली कर सबको चौंका दिया था। यह रैली तीन तलाक के मुद्दे पर विरोध के लिए की गई थी और कहा गया था कि इस्लाम के कानून में बदलाव बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस रैली में बिहार के हजारों मुस्लिम इकट्ठा हुए थे।

इमारत-ए-शरिया मुसलमानों को कलमे की बुनियाद पर और शरीयत के तहत संगठित और अनुशासित करने के उद्देश्य से काम कर रहा है। यह संगठन आज से नहीं बल्कि आजादी के पहले साल 1921 से ही मुसलमानों को एकजुट करने के लिए कार्य कर रहा है। इसकी तीन प्रमुख कमेटियां हैं, जिसमें मजलिस-ए अरबाब-ए-हल्लोअक्द, मजलिस-ए-शूरा और मजलिस-ए-आमला शामिल हैं। बिहार में नीतीश सरकार में मंत्री खुर्शीद अहमद के खिलाफ भी इस संगठन ने जुलाई, 2017 को एक फतवा जारी किया था। खुर्शीद अहमद के खिलाफ यह फतवा इमारत-ए-शरिया द्वारा जारी किया गया था। मंत्री ने 'जय श्रीराम' का नारा लगाया था, जिस कारण उनके खिलाफ फतवा जारी हुआ था।

संजीव कुमार

वर्ष प्रतिपदा
भारतीय नववर्ष पर विशेष

आजादी के 60 साल तक एक साधारण हिन्दू, जिन्हें 'हिन्दू रेट ऑफ ग्रोथ' कहकर अपमानित किया गया – वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत रहा। उसने आठवीं शताब्दी से इस्लामी आक्रांताओं के सतत मजहबी हमले झेले...

भारतीय संस्कृति में प्रतिपदा का महत्व

हिंदू पंचांग की प्रथम तिथि को प्रतिपदा कहा जाता है। इसमें प्रति का अर्थ है सामने और पदा का अर्थ है पग बढ़ाना। नव वर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही माना जाता है। इसी दिन से ग्रहों, वारों, मासों और संवत्सरों का प्रारंभ गणितीय और खगोल शास्त्रीय संगणना के अनुसार माना जाता है। आज भी जनमानस से जुड़ी हुई यही शास्त्रसम्मत काल गणना व्यवहारिकता की कसौटी पर खड़ी उतरी है। इसे राष्ट्रीय गौरवशाली परम्परा का प्रतीक माना जाता है ।

पौराणिक मान्यता अनुसार ब्रह्माजी ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही सृष्टि की रचना शुरू की थी। इसी दिन भगवान विष्णु ने दशावतार में से पहला मत्स्य अवतार लेकर प्रलयकाल में अथाह जलराशि में से मनु की नौका का सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया था। प्रलयकाल समाप्त होने पर मनु से ही नई सृष्टि की शुरुआत हुई।

प्रतिपदा का महत्व

* भगवान ब्रह्मा जी ने इसी दिन सूर्योदय के समय सृष्टि की रचना शुरु की थी।
* राजा विक्रमादित्य की भांति शालीवाहन ने हुनों और शकों को परास्त कर भारत मे श्रेष्ठतम राज्य स्थापित् करने हेतु यही दिन चुना और विक्रम संवत की स्थापना हुई।
* इस दिन को भगवान श्री राम का राज्याभिषेक दिवस भी माना जाता है।
* शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात नवरात्र का पहला दिन यही है।
* यह सिखो के दूसरे गुरु श्री अंगददेव जी का जन्मदिन है।
* इस दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की।
* सम्राट युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।
* इसी दिन पर संघ संस्थापक डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार का जन्मदिन होता है।
* यह दिन हमारे सामाजिक और धार्मिक

नवरेह कश्मीरी नववर्ष का दिन है। साजिबू चेराओबा: यह मणिपुर के सबसे महत्त्वपूर्ण त्योहारों में से एक माना जाता है। भारतीय ज्ञान विज्ञान की परम्परा सबसे प्राचीनतम है , चैत्र प्रतिपदा सनातन काल से मनाते आ रहे है...

कार्यों के अनुष्ठान की धुरी के रूप में महत्वपूर्ण तिथि बनकर मान्यता प्राप्त कर चुका है । आज भी भारत में प्रकृति,शिक्षा तथा राजकीय कोष आदि के चलन संचालन में मार्च अप्रैल के रूप में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही देखते हैं । हिन्दू काल गणना सूक्ष्तम से विराटतम है, 2 परमाणु = 1 अणु से प्रारम्भ होकर वर्ष , युग , मन्वन्तर , कल्प (4 अरब 32 करोड़) आदि तक जाती है, जबकि अंग्रेज़ी कलेंडर में अनेक त्रुटिया है। सामान्यत : कलेंडर सूर्य या चंद्र आधारित होते है , ग्रैगेरियन कैलेंडर सूर्य आधारित जबकि इस्लामिक कैलेंडर चंद्र आधारित है। वही भारतीय पंचांग सूर्य-चंद्र आधारित है , पंचांग में ऋतू , दिन (वार) सूर्य आधारित जबकि माह एवं तिथि चंद्र आधारित है। सौर वर्ष 365 दिन का और चंद्र वर्ष 354 दिन का होता है , जिसमे प्रत्येक वर्ष 11 दिन का अंतर आता है। इसी तरह 5 वर्ष में लगभग 55 दिन का अंतर हो जाता है , इसीलिए हर 2-1/2 (ढाई) वर्ष में 1 चंद्र माह बढ़ जाता है जिसे हम मलमास या पुरषोत्तम माह के नाम से जानते है। भारत में चैत्र शुक्लादि, उगादि, गुड़ी पड़वा, चेटीचंड, नवरेह और साजिबू चेराओबा मनाया गया। वसंत ऋतु के ये त्योहार भारत में पारंपरिक नववर्ष की शुरुआत के प्रतीक हैं।

गुड़ी पड़वा और उगादी: ये त्योहार कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र सहित दक्कन क्षेत्र के लोगों द्वारा मनाए जाते हैं। इसमें गुड़ और नीम परोसा जाता है, जिसे दक्षिण में बेवु-बेला कहा जाता है। गुड़ी महाराष्ट्र में घरों में तैयार की जाने वाली एक गुड़िया है। उगादी पर घरों में दरवाज़ों को आम के पत्तों से सजाया जाता है जिन्हें कन्नड़ में तोरणालु कहा जाता है।

चेटीचंड: चेटीचंड सिंधी समुदाय का झूलेलाल जयंती के रूप में नववर्ष का त्योहार है।

नवरेह: नवरेह कश्मीरी नववर्ष का दिन है। साजिबू चेराओबा: यह मणिपुर के सबसे महत्त्वपूर्ण त्योहारों में से एक माना जाता है। भारतीय ज्ञान विज्ञान की परम्परा सबसे प्राचीनतम है , चैत्र प्रतिपदा सनातन काल से मनाते आ रहे है। इसीलिए चैत्र प्रतिपदा सर्वप्रथम ब्रह्मा जी की पूजा 'ॐ' के उच्चारण से करे।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः ।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः ।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।
नूतन वर्ष मंगलमय हो

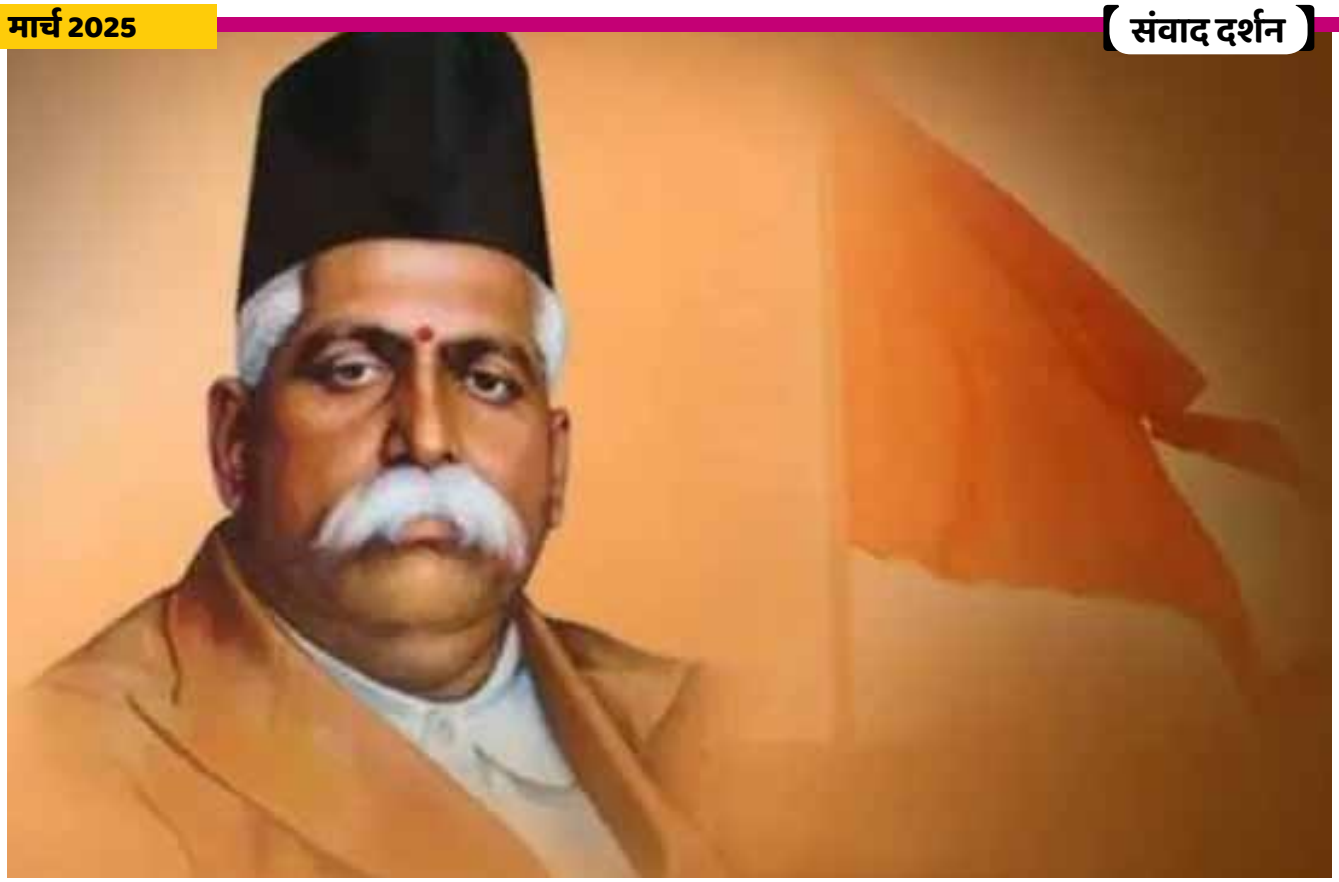

मंदिर निर्माण के बाद अधिकांश लोग चले गए। वर्तमान में तीन परिवार ही गांव में रह गए हैं। उन लोगों ने यहां के स्थानीय लोगों को इस विधा में प्रशिक्षित किया और यह एक प्रमुख कला का केंद्र बनकर उभरा। 29 जनवरी को पत्थरकट्टी की मूर्तियों को जीआई टैग मिला। कार्यक्रम में उन कलाकारों को भी सम्मानित किया गया...

पुनर्जागरण के पुरोधा : डॉ. हेडगेवार

डॉ केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, वि. सं. 1946 (तदनुसार 1अप्रैल, 1889) को नागपुर में हुआ था। वर्ष प्रतिपदा को महाराष्ट्र में 'गुड़ीपड़वा' के नाम से जाना जाता है। यह दिन हिंदू मन, हृदय और विवेक को भारत के इतिहास के घटनाचक्र, राष्ट्र की अस्मिता, सांस्कृतिक परंपराओं एवं वीर तथा वैभवशाली पूर्वजों की विरासत का यशस्वी बोध कराता है। डॉक्टर साहब स्वभाव से अजातशत्रु थे। उनके विरोधी भी उनके चरित्र पर कोई छींटाकशी नहीं कर सकते थे। उनका इस बात पर बड़ा जोर रहता था कि कार्यकर्ता का चरित्र बिल्कुल साफ होना चाहिए। चरित्र के बारे में उन्होंने कभी भी ढिलाई नहीं बरती। व्यक्तियों में राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण उनके जीवन का पहला काम था, किंतु मनुष्य इसकी सीख किसी के बोलने भर से नहीं बल्कि उसके स्वयं चरित्र को देखकर लेता है। इसके लिए डॉक्टर साहब का चलता-फिरता उदाहरण स्वयंसेवकों के सामने रहता था। उनके नेतृत्व की विशेषता यह थी कि जितने उनके पास जाओ उतने ही वे महान लगते थे, इससे उनका आकर्षण बढ़ता जाता था। एक मोहक मधुरता उनके साथ रहने में थी। साथ ही उनमें न तो बड़प्पन की भावना थी और न ही अनावश्यक शिष्टाचार।

डॉक्टर जी की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता थी हिन्दू धर्म संस्कृति में दृढ़-मूल उनका स्वयं प्रतिभत्व। संघ की कार्यपद्धति में इसका दर्शन हमें होता है। यह कार्यपद्धति न किसी पश्चिमी कार्यपद्धति की नकल है, न किसी भारतीय संस्था तथा दल की कार्यपद्धति की। यह सर्वविदित है कि स्वातंत्र्यवीर सावरकर का विदर्भ मध्य प्रदेश का दौरा डॉक्टर जी ने ही आयोजित किया था। डॉक्टर जी की इन भूमिकाओं का अन्वयार्थ जो नहीं समझ सकते उनका बालासाहब के विजयादशमी भाषण का अन्वयार्थ समझने में असमर्थ होना स्वाभाविक है। आचार्य अत्रे डॉक्टर साहब के स्वभाव के गुणों को बताते हुए एक प्रसंग का जिक्र करते हैं। जिसमें वह बताते हैं कि डॉक्टर साहब जैसे नेता उनके घर आने वाले हैं, इस बात का पहले उनके मन पर बड़ा दबाव था। पर जब वे सामने आए तो उनका बोलना चलना देखकर वह दबाव एकदम दूर हो गया और ऐसा लगा जैसे परिवार के ही कोई बड़े व्यक्ति घर में घूम रहे हैं। अपनी सादगी, प्रसन्नता, स्नेहशीलता और सहज रूप से घुलमिल

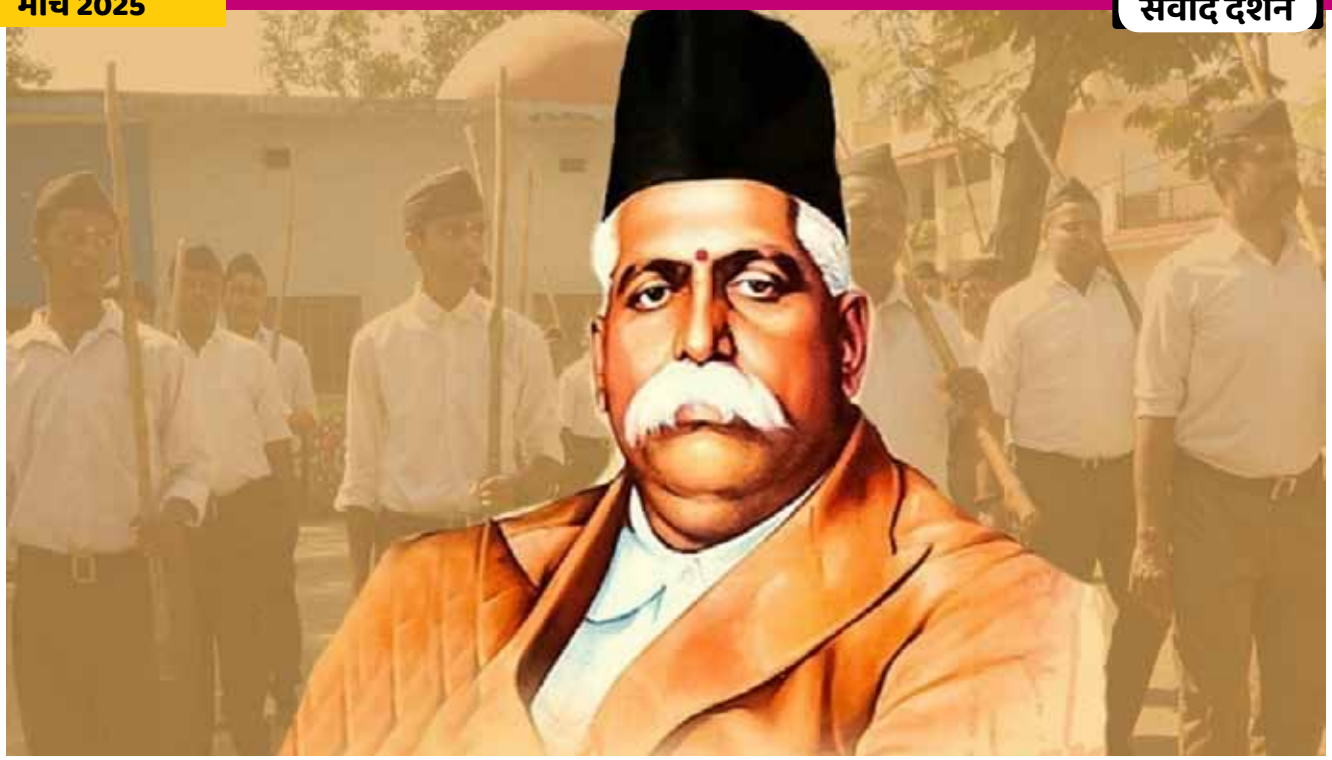

डॉ. हेडगेवार : देशभक्ति जीवन का स्वर : डॉक्टर हेडगेवार जी के जीवन में बचपन से ही हमेशा कर्म के रूप में देशभक्ति का भाव बिना किसी समय छूटे बना रहा, जिससे उनका जीवन हमेशा प्रकाशित होता रहा...

जाने की आदत के कारण डॉक्टर साहब कहीं भी अनचाहे नहीं हुए। डॉ साहब स्वयंसेवकों में भी यही गुण देखना चाहते थे।

डॉ. हेडगेवार : देशभक्ति जीवन का स्वर : डॉक्टर हेडगेवार जी के जीवन में बचपन से ही हमेशा कर्म के रूप में देशभक्ति का भाव बिना किसी समय छूटे बना रहा, जिससे उनका जीवन हमेशा प्रकाशित होता रहा। जब वे नागपुर के नील सिटी हाई स्कूल में पढ़ रहे थे तब अंग्रेज सरकार ने बदनाम रिस्ले सर्क्युलर जारी किया। इस आदेश के द्वारा अंग्रेज सरकार विद्यार्थियों को स्वतंत्रता आंदोलन से दूर रखना चाहती थी। नेतृत्व का गुण केशवराव में विद्यार्थी जीवन से ही था। विद्यालय की जांच के दौरान डॉक्टर हेडगेवार ने हर एक कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा जांच करने वालों का स्वागत वंदे मातरम से करवाया। विद्यालय में खलबली मच गई मामला फैल गया और अंत में सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालय से उन्हें निकाल दिया गया। फिर यवतमाल की राष्ट्रीय शाला में उन्होंने मैट्रिक की पढ़ाई की किंतु परीक्षा देने से पहले ही वह विद्यालय भी अंग्रेज सरकार द्वारा बंद कर दिया गया। अब परीक्षा देने उन्हें अमरावती जाना पड़ा। जब कोई राष्ट्र गुलाम होता है तब देशभक्ति की भावना रखने वाले हृदय बहुत ही भावुक हो जाते हैं।

केशव निडर और साहसी थे तथा देश के लिए किसी भी प्रकार का त्याग करने के लिए तैयार थे। अपने लिए पैसा, सम्मान, ख्याति और आराम आदि किसी बात की इच्छा उनके मन में कभी पैदा नहीं हुई। उन्होंने सन् 1910 में कोलकाता के नेशनल मेडिकल कॉलेज में डाक्टरी की पढ़ाई के लिए दाखिला लिया ताकि बंगाल के क्रांतिकारियों से संपर्क स्थापित हो और वैसा ही कार्य विदर्भ में भी कर सके। वहां पुलिन बिहारी दास के नेतृत्व में 'अनुशीलन समिति' नाम की क्रांतिकारियों की एक टोली काम कर रही थी। इस समिति के साथ केशवराव गहरा संबंध जोड़कर बहुत मजबूती से जुड़ गए।

माध्यमिक परीक्षा के बाद हेडगेवार जी का संपूर्ण समय क्रांतिकारियों के बीच ही बीतने लगा था। जब बंगाल से एक क्रांतिकारी माधवदास सन्यासी नागपुर आए तब केशव को ही उन्हें भूमिगत रखने की जिम्मेदारी सौंप गई थी। वह 6 महीने तक नागपुर एवं आसपास के क्षेत्र में रहकर बाद में जापान गए थे। अलीपुर बम केश में फंसे क्रांतिकारियों के बचाव के लिए भी मध्य प्रांत में धन संग्रह हुआ था और केशव पर नागपुर की जिम्मेदारी थी। कलकत्ता देश के क्रांतिकारियों के लिए काशी के समान माना जाता था। केशव के मन में भी कलकत्ता जाकर क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ने की अभिलाषा थी। उन पर सी.आई. डी. एवं पुलिस की निरंतर निगरानी थी। अतः अध्ययन की आड़ में ही वह जाते, सौभाग्य से माध्यमिक परीक्षा में वह अपेक्षित अंक प्राप्त करके द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। पढ़ाई में उनकी रुचि विज्ञान के क्षेत्र में थी। माध्यमिक परीक्षा के बाद केशव ने एक प्राइवेट स्कूल में शिक्षक का काम करके धनोपार्जन अवश्य किया था परंतु कलकत्ता जैसे महंगे शहर में रहने के लिए इससे कहीं अधिक धन की आवश्यकता थी। उनकी निष्ठा एवं श्रेष्ठता ने प्रांत के तिलकवादी

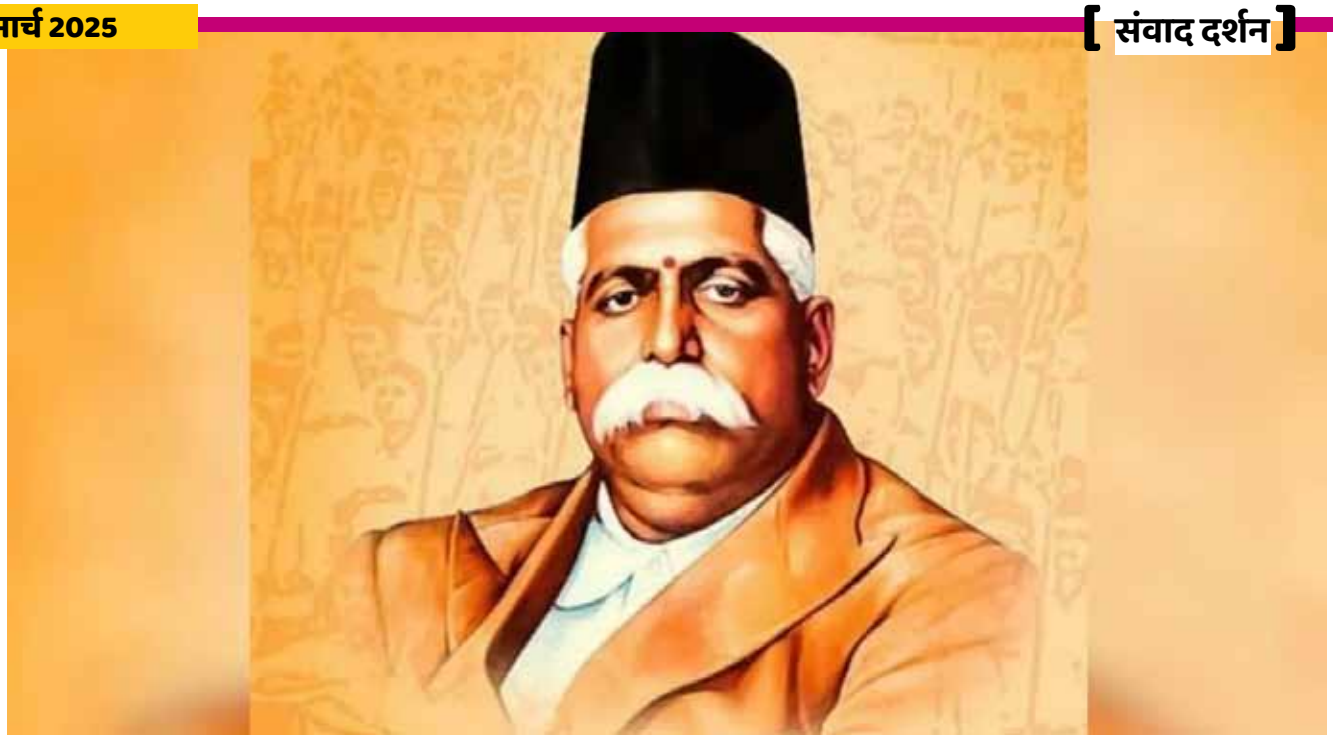

अनुशीलन समिति की स्थापना 1901 में की गई थी। यह पूरे बंगाल में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं संगठित क्रांतिकारी संस्था मानी जाती थी। इसके संस्थापक पी. मित्रा थे। बंगाल के सभी प्रसिद्ध क्रांतिकारी इससे जुड़े हुए थे...

नेताओं का दिल जीत लिया था। वे सब उनके भविष्य के बारे में विचार मंथन में स्वतः ही लग गए थे। केशव ने बचपन में अब तक अपनी इच्छा, कठिनाई अथवा कष्ट के बारे में कभी किसी के आगे जिक्र भी नहीं किया था। डॉ. मुंजे एवं उनके सहयोगी उनके इस स्वभाव से बहुत अच्छी तरह परिचित हो चुके थे। सबने मिलकर कलकत्ता में नेशनल मेडिकल कॉलेज में उनका नाम लिखवाने और वहां लॉज में रहकर अध्ययन एवं अपेक्षित क्रांतिकारी गतिविधियाँ करने की व्यवस्था की। रामलाल वाजपेयी ने अपने जीवन चरित्र में इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उनको कलकत्ता भेजने का असली मकसद क्रांतिकारी संगठन संबंधी जानकारी प्राप्त करना एवं मध्यप्रांत और बंगाल के बीच सेतु का काम करना था। उन्होंने लिखा है कि केशव हेडगेवार को श्री दाजी साहब बुटी की कुछ आर्थिक मदद दिलाकर शिक्षा के लिए पुलिन बिहारी दास के हाथ के नीचे क्रांति एवं संगठन के लिए भेजा गया था। उनके रहने की व्यवस्था कलकत्ता के प्रेम गुजराल मार्ग पर स्थित शांति निकेतन में की गई थी। नेशनल मेडिकल कॉलेज में देशभर से छात्र आते थे और इसका अखिल भारतीय चरित्र था। केशव के साथ अनेक मराठा छात्र वहां पढ़ने गए थे। नारायणराव सावरकर और आठवले आदि केशव जी के मित्रों में से थे। डॉक्टर साहब जब कलकत्ता पहुँचे थे तो उस दौरान क्रांतिकारी पर अंग्रेजी दमन का दौर चल रहा था। सरकार राष्ट्रद्रोही सभा अधिनियम, 1907, आपराधिक कानून संशोधन अधिनियम, 1908 और इंडियन प्रेस एक्ट, 1910 के द्वारा क्रांतिकारी पत्रों, संगठनों एवं व्यक्तियों को दंडित करने, प्रतिबंधित करने एवं उन पर मुकदमा चलाने का कार्य कर रही थी। क्रांतिकारी संगठनों, जिनमें बांधव बर्ती, अनुशीलन साधना समिति, आत्मोन्नति समिति प्रमुख थे, को गैर कानूनी घोषित करके सरकार उनके संचालकों एवं कार्यकर्ताओं की धर-पकड़ करने में लगी हुई थी। ऐसे प्रतिबंधित संगठनों की संख्या लगभग 50 थी। अनुशीलन समिति की स्थापना 1901 में की गई थी। यह पूरे बंगाल में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं संगठित क्रांतिकारी संस्था मानी जाती थी। इसके संस्थापक पी. मित्रा थे। बंगाल के सभी प्रसिद्ध क्रांतिकारी इससे जुड़े हुए थे। इसमें अरविंद घोष, विपिन चंद्र पाल, त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती, नलिनी किशोर गुहा, प्रतुल गांगुली, जोगेश चंद्र चटर्जी आदि नाम उल्लेखनीय हैं।

सन 1915 से 1920 तक नागपुर में रहते हुए डॉक्टर साहब ने राष्ट्रीय आंदोलन में खूब काम किया। वे घूम-घूम कर खूब सभाएं और बैठके किया करते थे। किंतु युवाओं में पूर्ण स्वतंत्रता की आग धधकाने पर विशेष ध्यान देते थे। अपना काम पूरे मन से करना, सहयोगियों को जोड़ना और बिना किसी लालच के भाव से काम करने के उनके गुण के कारण नेता लोग उनके सहयोग को बहुत महत्वपूर्ण मानने लगे। डॉक्टर साहब को जो समझ आता था उसे बिना घूमाए वह बड़े नेताओं के सामने रख देते थे। सन 1920 के अधिवेशन में उनके व्यक्तित्व पर सब का ध्यान गया और उनके विचार अलग होते हुए भी

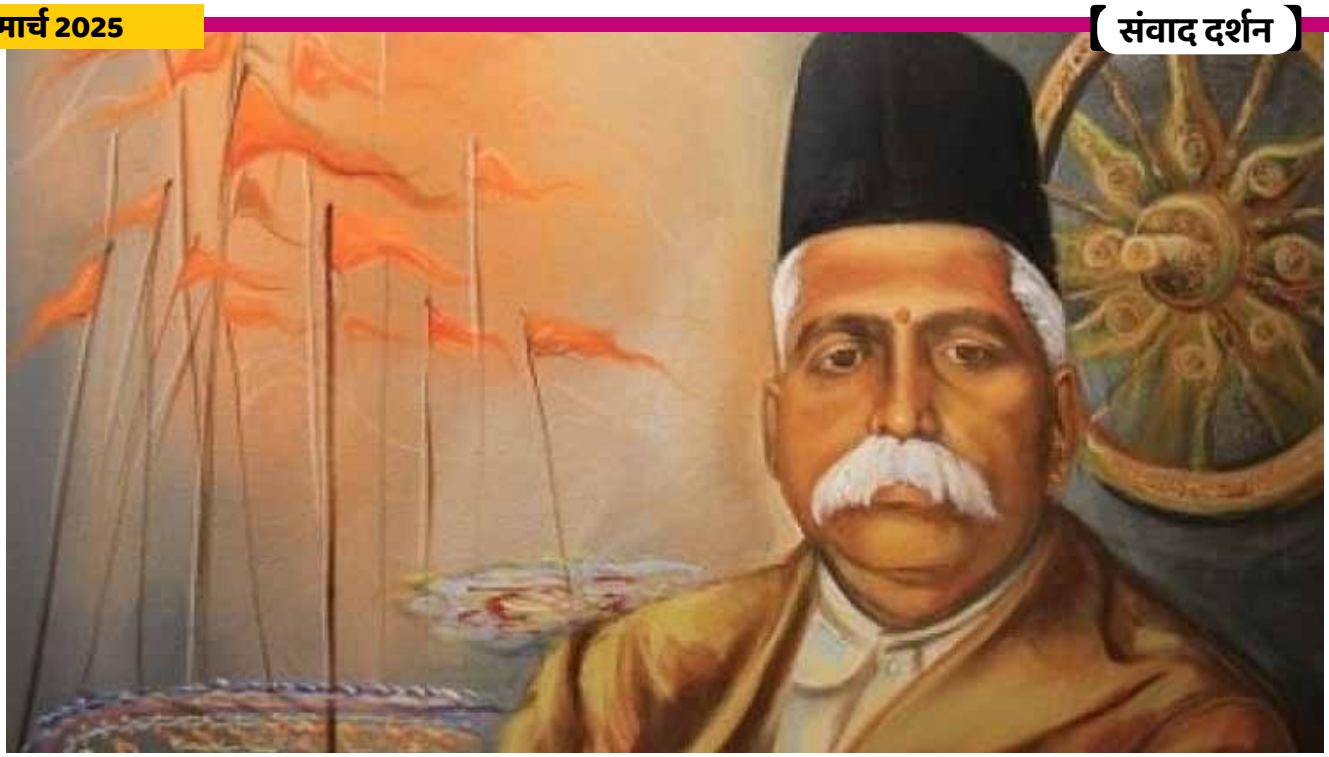

सन 1911 में दिल्ली दरबार के बहिष्कार आंदोलन में वह शामिल हुए थे तो वहीं 1914 में सरकार द्वारा राष्ट्रीय मेडिकल कॉलेज की डिग्री न मानने के खिलाफ जबरदस्त जनमत तैयार करके आंदोलन भी उन्होंने चलाया था...

संस्था के अनुशासन का पालन करने जैसा उनका एक विशेष गुण सबको देखने को मिला। नागपुर में पुलिस ने हेडगेवार एवं डॉ मुंजे के घरों की दो बार तलाशी ली थी परंतु उन्हें कुछ भी हाथ नहीं लगा। इस प्रकार सरकार हेडगेवार के बारे में सब कुछ जानते हुए भी कुछ कर सकने में असमर्थ महसूस कर रही थी।

क्रांतिकारी आंदोलन में अपनी भूमिका के साथ-साथ डॉक्टर साहब ने बंगाल के दो जन आंदोलनों में भी सक्रिय रूप से भाग लिया था। सन 1911 में दिल्ली दरबार के बहिष्कार आंदोलन में वह शामिल हुए थे तो वहीं 1914 में सरकार द्वारा राष्ट्रीय मेडिकल कॉलेज की डिग्री न मानने के खिलाफ जबरदस्त जनमत तैयार करके आंदोलन भी उन्होंने चलाया था।

सरकार के निर्णय के पीछे नेशनल मेडिकल कॉलेज के छात्रों की क्रांतिकारी प्रवृत्ति मुख्य कारण रही थी। आनंद बाजार पत्रिका ने 16 नवंबर, 1915 को संपादकीय लिखकर इस कानून का विरोध किया। पत्रिका के संपादक मोतीलाल घोष ने हेडगेवार को हर तरह की मदद देकर आंदोलन को मजबूत स्वरूप प्रदान किया। सुरेंद्रनाथ बनर्जी भी आंदोलन से जुड़कर आंदोलन को मजबूत स्वरूप प्रदान कर रहे थे। कलकत्ता में विशाल जनसभा आयोजित की गई थी। हेडगेवार ने नागपुर पहुंचकर इस आंदोलन के समर्थन में सभा का आयोजन किया और इसमें बिल के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया गया। अंततः सरकार को 1916 में ही इस काले कानून को वापस लेना पड़ा। डॉ. हेडगेवार जी ने अत्यंत विचार मंथन के बाद संघ प्रारम्भ किया। आज संघ की प्रसंगिकता समझ में आती है।

इस समय हमारे हिंदू समाज और राष्ट्र को कमजोर और जर्जर करने के लिए अनेक शक्तियों काम कर रही हैं। उनका एक प्रयास यह होता है कि हिंदू समाज के भीतर झगड़ा करवाए जाएं और वे जान बूझकर झूठा और विकृत प्रचार कर किसी समूह की भावना को भड़काते हैं। इसके लिए उन्हें विदेश से भरपूर पैसा मिलता है। यह अलग से बताने की जरूरत नहीं है कि इसके पीछे राजनीतिक मंसूबे भी रहते हैं। झुग्गी- झोपड़ियों में तथा वन-आंचल में रहने वाले हमारे बंधुओं को उनकी नजरअंदाज की हुई स्थिति, उनके लिए हुए विषमतापूर्ण व्यवहार तथा समाज में फैली भीषण गरीबी और बेरोजगारी की बातों को लेकर असंतोष भड़काया जाता है। दूसरी ओर पैसे का लालच दिखाकर उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा से काटने का योजनाबद्ध प्रयास चल रहा है। मुसलमान द्वारा हिंदू समाज के इस वर्ग को अपने साथ जोड़कर एक राजनीतिक दल भी खड़ा किया जा रहा है। इसके आड़ में अलगाववाद तथा परस्पर विद्वेष खड़ा करने का प्रयास है। इसका सामना करने के लिए संघ धार्मिक नेताओं, विद्वानों और निःस्वार्थ समाज सेवकों के सहयोग से राष्ट्रीय जीवन में समरसता व आत्मीयता भरने देशव्यापी प्रयास कर रहा है। यह अनुभव सिद्ध है कि हिंदुत्व के आधार पर आपसी विश्वास निर्माण करने के प्रयास सफल हो रहे हैं और इस कार्य में समाज का भी भरपूर सहयोग मिलता है।

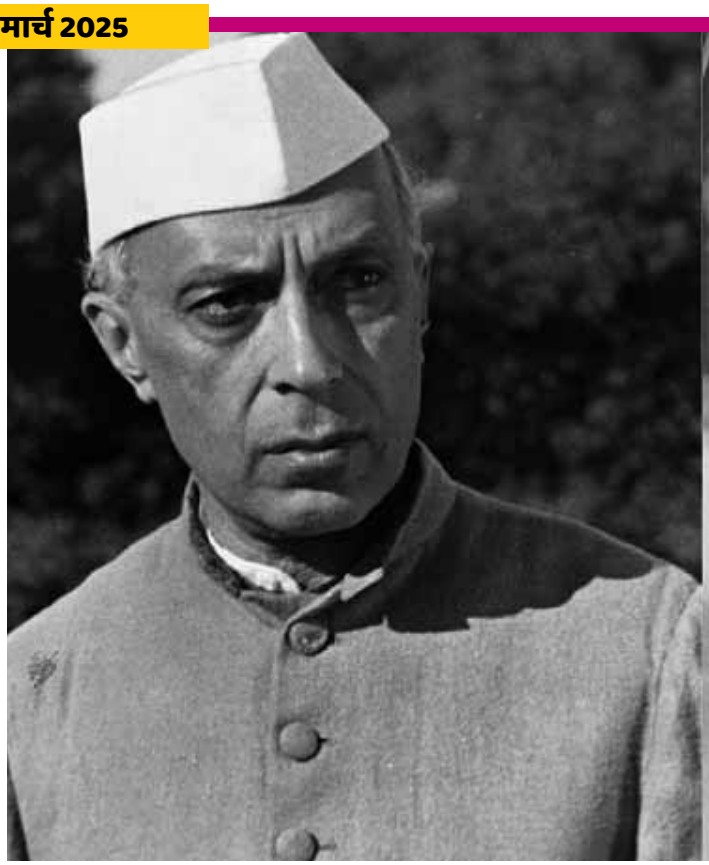

जब सरदार पटेल ने सौराष्ट्र में पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन समारोह पर 1951 में राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद को आमंत्रित किया था तो नेहरु ने कहा था : 'सेक्युलर राष्ट्र के प्रथम नागरिक के नाते आपको धर्म से दूर रहना चाहिये....

राजेंद्र बाबू और पंडित नेहरू : अनसुलझे रिश्ते

प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद और प्रथम राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल नेहरू के बीच चले सत्ता संघर्ष का विश्लेषण छः दशक बाद भी हो रहा है। अभी भी नए -नए तथ्य सामने आते रहते हैं। राष्ट्रपति बनाम प्रधानमंत्री के विवाद के संदर्भ को बेहतर समझने के लिए भारतीय गणतंत्र की शैशवास्था के प्रसंगों पर गौर करना होगा ताकि वे त्रुटियां फिर आज के संवैधानिक स्थितियों को न ग्रस सके।

यह वाकया है नव स्वाधीन भारतीय गणतंत्र के प्रारंभिक वर्षों का। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के आपसी रिश्ते तथा व्यवहार के नियम तब निर्धारित नहीं हुए थे। उसी दौर में राष्ट्रीय विधि संस्था (सर्वोच्च न्यायालय के सामने वाले भवन में) राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद का भाषण होने वाला था। विषय था : राष्ट्रपति बनाम प्रधानमंत्री की शक्तियां। संपादक दुर्गादास की आत्मकथा के अनुसार प्रधानमंत्री नेहरु खुद सुबह ही सभा स्थल पर पहुंच गये और राष्ट्रपति के भाषण की सारी प्रतियां जला दीं। राष्ट्रपति के निजी सचिव बाल्मीकि बाबू बमुश्किल केवल एक प्रति ही बचा पाये।

यह आजाद हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री के व्यवहार का था! अमेरिकी राष्ट्रपति जनरल आइजनहोवर ने राजेन्द्र बाबू को 'ईश्वर का नेक आदमी' बताया था। उन्हें अमेरिका आमंत्रित भी किया था। पंडित नेहरू ने विदेश मंत्रालय से आमंत्रण को निरस्त करवा दिया। विदेश मंत्री ने कारण बताया कि अभी उपयुक्त अवसर नहीं है। (दुर्गादास : 'इंडिया फ्रॉम कर्जन टू नेहरू एण्ड आफ्टर' : पृष्ठ—331.339, अनुच्छेद 13, शीर्षक राष्ट्रपति बनाम प्रधानमंत्री)।

जब सरदार पटेल ने सौराष्ट्र में पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन समारोह पर 1951 में राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद को आमंत्रित किया था तो नेहरु ने कहा था : 'सेक्युलर राष्ट्र के प्रथम नागरिक के नाते आपको धर्म से दूर रहना चाहिये।' लेकिन राजेन्द्र बाबू पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। वे गुजरात गये। सरदार पटेल ने राजेन्द्र बाबू को तर्क दिया था, "जब—जब भारत मुक्त हुआ है, तब—तब सोमनाथ मंदिर का दोबारा निर्माण हुआ है। यह राष्ट्र के गौरव और विजय का प्रतीक है।"

अब एक दृश्य इस प्रथम राष्ट्रपति की सादगी का। डॉ. राजेंद्र प्रसाद 'राजेन बाबू' के नाम से पुकारे जाते थे। तब वकील राजेन्द्र प्रसाद अपना गमछा तक नहीं धोते थे। सफर पर नौकर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वही छात्र थे जिसके लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय के कानून विषय के (मास्टर ऑफ़ लॉ) परीक्षक ने लिखा कि, 'परीक्षार्थी परीक्षक से भी अधिक जानकार है।' ऐसे व्यक्ति राष्ट्रपति बने थे...

लेकर चलते थे। चम्पारण सत्याग्रह पर बापू का संग मिला तो दोनों लतें बदल गयी। धोती खुद धोने लगे (राष्ट्रपति भवन में भी)। घुटने तक पहनी धोती उनका प्रतीक बन गयी। आजकल तो रिटायर राष्ट्रपति को आलीशान विशाल बंगला मिलता है। मगर राजेन बाबू सदाकत आश्रम (कांग्रेस आफिस, पटना) के सीलन भरे कमरे में रहते थे। उन्हें दमे की बीमारी थी। वह और भयावह हो गया। उनकी मृत्यु भी श्वास रोग से ही हुई। जब उनका निधन हुआ (28 फरवरी, 1963) तो उनके अंतिम संस्कार में जवाहरलाल नहीं गये। बल्कि प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन से आग्रह किया था कि वे भी न जायें। डा. राधाकृष्णन ने जवाब में लिखा (पत्र उपलब्ध है) कि : 'मैं तो जा ही रहा हूं। तुम्हें भी शामिल होना चाहिये।' पर नेहरु नहीं गये।

उन्होंने अल्प सूचना पर अपना जयपुर का दौरा लगवा लिया। वहां सम्पूर्णानन्द (यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री) राज्यपाल थे। वे राजेन बाबू के साथी और सहधर्मी थे। वे राजेन बाबू के अंतिम संस्कार में शामिल होने जाने वाले थे। उन्हें जाने से रोकने के लिए ही पंडित नेहरू ने वहां का दौरा तय किया था। सम्पूर्णानन्द ने प्रधानमंत्री से दौरा टालने की प्रार्थना की थी। पर नेहरु जयपुर गये। राज्यपाल को एयरपोर्ट पर अगवानी की ड्यूटी बजानी पड़ी।

पंडित नेहरू का एक और किस्सा चर्चित है। उन्होंने जीते जी खुद को भारत रत्न देने का फैसला करवा डाला। जबकि प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू को पद से हटने के बाद भारत रत्न दिया गया। क्या यह सही था ?

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वही छात्र थे जिसके लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय के कानून विषय के (मास्टर ऑफ़ लॉ) परीक्षक ने लिखा कि, 'परीक्षार्थी परीक्षक से भी अधिक जानकार है।' ऐसे व्यक्ति राष्ट्रपति बने थे।

परिवारवाद की नींव : तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष उच्छरंगराय धेबर के स्थान पर पुत्री इंदिरा गांधी के नामित होने के पूर्व एक महत्वपूर्ण घटना हुई थी। इंदौर के लक्ष्मीनाथ नगर में 5 जनवरी, 1957 को हुए कांग्रेस प्रतिनिधियों की बैठक में केन्द्रीय रक्षा उत्पाद मंत्री महावीर त्यागी (देहरादून सांसद) और पार्टी मुखिया धेबर में तीव्र वाद-विवाद हुआ था। त्यागीजी ने कहा था कि आगामी (द्वितीय) लोकसभा निर्वाचन में नेहरू की निजी लोकप्रियता के कारण कांग्रेस विजयी होगी। धेबर ने जवाब दिया कि कांग्रेस की जड़ें काफी गहरी हैं। पार्टी अपने बूते जीतेगी।' (दैनिक हिन्दू : 6 जनवरी, 1957)।

बेटी ही रही मन में : स्वर्गीय वामपंथी संपादक कुलदीप नायर, जो गृहमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के सूचना अधिकारी थे, ने लिखा (19 मार्च 2011) कि शास्त्री जी ने उन्हें यह बताया था कि 'पंडित जी के दिल में बस उनकी पुत्री ही है।' नायर का प्रश्न था कि नेहरू के बाद प्रधानमंत्री क्या शास्त्रीजी बनेंगे?

अकेले पड़ गये थे : 1946 में जब देश की आजादी की बात लगभग तय हो गई थी, तब कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव होना था। राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए प्रदेश कमेटियों को नाम प्रस्तावित करना था। नेहरू के पक्ष में किसी भी प्रदेश कांग्रेस समिति ने कोई नामांकन नहीं दिया था। अधिकांश कमेटियों ने सरदार पटेल का नाम भेजा था। उनके पक्ष में बहुमत था पर उन्होंने गांधी जी के कहने पर अपना नाम नेहरू के पक्ष में वापस ले लिया। कारण था कि बापू को आशंका थी कि सोशलिस्टों के साथ मिलकर नेहरू कांग्रेस पार्टी को तोड़ देंगे। (दि ट्रिब्यून, 14 नवम्बर, 2001: वी. एन. दत्त)। ऐसा ही कदम इंदिरा गांधी 1967 में, फिर दो बार आगे भी, उठाया था।

के. विक्रम राव

1949 में जब बंटवारा को 2 साल हुए थे तब उत्तर प्रदेश के अंदर ही हिंदू महासभा ने हुंकार भरी थी कि अब नेज़ा मेला नहीं लगने देंगे, तब भारतीय मुसलमान डरे हुए थे क्योंकि पाकिस्तान बने 2 साल हुए थे...

हिंदुओं की छाती में घुसा नेज़ा (भाला) योगी जी ने निकाल दिया

संभल के पुलिस उपाधीक्षक श्रीशचंद का एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें उन्होंने गाजी सालार मसूद की याद में मेला लगाने वाली कमेटी के मौलानाओं को जमकर फटकारा है और मेले की अनुमति देने से इनकार कर दिया है। ये मेला सदियों से लगता आ रहा था, जिसे नेज़ा मेला कहा जाता है।

1949 में जब बंटवारा को 2 साल हुए थे तब उत्तर प्रदेश के अंदर ही हिंदू महासभा ने हुंकार भरी थी कि अब नेज़ा मेला नहीं लगने देंगे, तब भारतीय मुसलमान डरे हुए थे क्योंकि पाकिस्तान बने 2 साल हुए थे। नेजा कमेटी ने खुद प्रशासन के पास जाकर कहा था कि अब हम नेजा मेला नहीं लगाएंगे लेकिन उस वक्त नेहरू की शह पर कांग्रेसियों ने धरना देकर नेजा मेला करवाने के लिए प्रशासन पर दबाव बढ़ाया। जिसके बाद हिंदू महासभा की नहीं चली और नेजा मेला लगा।

भारत के इतिहास में यह पहली बार है जब किसी हिंदुओं के राजर्षि (योगी आदित्यनाथ) ने नेजा मेला को पूरी तरह से बंद करवा दिया है। सोमनाथ के लुटेरे गाजी सालार मसूद का जिक्र करते हुए योगी आदित्यनाथ ने दो टूक शब्दों में कहा कि आक्रांताओं का महिमामंडन देशद्रोह है। बहराइच में लगने वाले गाजी सालार मसूद का उर्स भी प्रतिबंधित हो सकता है। हिंदू संगठनों ने बहराइच के थानों में प्रार्थना पत्र देने शुरू कर दिए हैं।

यहां समझना जरूरी है कि आखिर कौन था गाजी सालार मसूद। गाजी सालार मसूद के पिता का नाम सालार साहू था और वो सोमनाथ के लुटेरे महमूद गजनबी का सेनापति था। उसकी हिंदुओं को लूटने पीटने की क्रूरता को देखते हुए महमूद गजनबी ने अपनी बहन की शादी सालार साहू से कर दी थी। इसी सालार साहू और गजनबी की बहन से पैदा हुआ था, गाजी सालार मसूद।

गाजी सालार मसूद 20 साल की उम्र में बहराइच की जंग में श्रावस्ती बहराइच के राजा सुहेलदेव से जंग करते हुए मारा गया था। आज भी उसकी मजार बहराइच में ही मौजूद है।

इतिहास को समझने के लिए कुछ महत्वपूर्ण तारीख

1014 ई.- अजमेर में गाजी सालार मसूद का जन्म
1025 ई.- गजनबी ने सोमनाथ मंदिर तोड़ा लूटा, उस वक्त गाजी सालार मसूद की उम्र 9 साल थी और जब गजनबी ने अपने साथियों से पूछा कि क्या सोमनाथ का शिवलिंग तोड़ना चाहिए तब 2 लोगों ने इसका विरोध

1030 ई.- इस वक्त गाजी सालार मसूद की उम्र 16 साल थी और इसी साल उसके मामा महमूद गजनबी की गजनी में मौत हो गई थी जिसके बाद गजनबी का सबसे बड़ा बेटा मसूद गद्दी पर बैठा। मसूद ने अपने दरबार में इच्छा जताई कि एक बार फिर भारत को लूटा जाए....

किया था हालांकी उस वक्त भी 9 साल का ये सालार मसूद इतना जिहादी था कि उसने अपने मामाजान गजनबी से शिवलिंग तोड़ने के लिए कहा था। मामाजान ने अपने भांजे की बात मान ली।

1030 ई.- इस वक्त गाजी सालार मसूद की उम्र 16 साल थी और इसी साल उसके मामा महमूद गजनबी की गजनी में मौत हो गई थी जिसके बाद गजनबी का सबसे बड़ा बेटा मसूद गद्दी पर बैठा। मसूद ने अपने दरबार में इच्छा जताई कि एक बार फिर भारत को लूटा जाए । उसने अपने फूफा सालार साहू को आदेश दिया तो उसने इनकार कर दिया। तब उसने अपने फुफेरे भाई गाजी सालार मसूद को आदेश दिया तो वो भारत पर आक्रमण के लिए तैयार हो गया। इस वक्त उसकी उम्र सिर्फ 16 साल थी लेकिन वो कच्ची उम्र में भी कितना कट्टर था आप समझ सकते हैं।

1031 ई.- सालार मसूद ने सिंधु नदी पार की और सबसे पहले उसका मुकाबला आनंदपाल और अर्जुन पाल से हुआ। पहले वो जंग हारा लेकिन फिर गजनी से और सेना मंगवाकर जंग जीत ली। इसके बाद उसका मुकाबला दिल्ली में महिपाल तोमर से हुआ पहले मुकाबले में वो हारा दूसरे में जीत गया। फिर वो मेरठ में हरिदत्त नामके एक शासक को हराकर इस्लाम कबूल करवाने में कामयाब रहा। इसके बाद वो कन्नौज बुलंदशहर में प्रतिहार वंश के राजाओं पर आसान विजय प्राप्त करते हुए अयोध्या में विध्वंस मचाते हुए बहराइच के मैदानों में आ धमका जहां उसका मुकाबला राजा सुहेलदेव से तय हो गया।

1034 ई.- बहराइच की जंग - इस वक्त सालार मसूद की उम्र करीब 20 साल की थी। राजा सुहेलदेव की सबसे बड़ी कामयाबी ये थी कि वो 21 हिंदू राजाओं को एक साथ मिलाने में कामयाब हुए। बंटोगे तो कटोगे के मंत्र को चरितार्थ करते हुए एक सम्मिलित हिंदू सेना तैयार हो गई। जिसने डेढ लाख अफगानों को गाजर मूली की तरह काट डाला। क्योंकि सुहेलदेव का आदेश एकदम साफ था एक भी अफगान बचना नहीं चाहिए। इस जंग का वर्णन करते हुए मिलाते मसूदी का रचयिता अब्दुल रहमान चिश्ती 1620 में लिखता है कि ये युद्ध इस्लाम के लिए विनाशक साबित हुआ। सुहेलदेव ने अपने पराक्रम से भारत में कई सौ सालों के लिए इस्लाम के सूरज को अस्त कर दिया। आगे चिश्ती यह भी कहता है कि गजनी का ऐसा कोई घर नहीं था जिसका बेटा इस जंग में मारा ना गया हो।

दिलीप पाण्डेय

2018 को इसने पटना के गांधी मैदान में एक बड़ी रैली कर सबको चौंका दिया था। यह रैली तीन तलाक के मुद्दे पर विरोध के लिए की गई थी और कहा गया था कि इस्लाम के कानून में बदलाव बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस रैली में बिहार के हजारों मुस्लिम इकट्ठा हुए थे।

नीतीश कुमार ने बिहार की जनता से धर्मनिरपेक्ष शासन और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा का वादा करके सत्ता प्राप्त की थी। लेकिन भाजपा के साथ उनका गठबंधन और इस अतार्किक और असंवैधानिक कानून का समर्थन उन प्रतिबद्धताओं के खिलाफ जाता है...

फतवों से परेशान बिहार

बिहार में आए दिन किसी ने किसी बात पर फतवे जारी होते रहते हैं। कुछ फतवे सुर्खियों में रहते हैं तो कुछ फतवे नजरअंदाज कर दिए जाते हैं। राजीव गांधी मंत्रिमंडल के समय शाहबानो केस के विरुद्ध फतवों की राजनीति बिहार से ही शुरू हुई थी। न सिर्फ स्थानीय बल्कि राष्ट्रीय स्तर के कई विषयों पर यहां फतवे जारी किए गए हैं। उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने की बात हो या फिर सीएए का मुद्दा, वक़्फ़ बिल का मसला हो या तीन तलाक का ; इन सभी विषयों पर फतवे जारी किए गए हैं।

इन सभी फतवों में इमारत शरिया की अहम भूमिका होती है। इस बार इमारत शरिया के नेतृत्व में सात मुस्लिम संगठनों ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा आयोजित इफ्तार पार्टी का विरोध किया है। इमारत शरिया ने इस इफ्तार पार्टी के विरोध में फतवा भी जारी किया है। इन सात संगठनों में जमात-ए-इस्लाम, जमात-ए-अहले हदीस, खानकाह मुजीबिया, मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, जमियत उलेमा-ए-हिंद और खानकाह रहमानी शामिल है।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार प्रतिवर्ष इफ्तार पार्टी का आयोजन करते हैं। इस वर्ष यह इफ्तार पार्टी 23 मार्च, 2025 को आयोजित थी। मुख्यमंत्री द्वारा वक्फ़ संशोधन विधेयक, 2024 पर खिलाफत नहीं करने के कारण बिहार के मुस्लिम संगठनों ने उन्हें एक प्रकार से धमकी देते हुए फतवा जारी किया। जारी पत्र में बताया गया है कि नीतीश कुमार ने बिहार की जनता से धर्मनिरपेक्ष शासन और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा का वादा करके सत्ता प्राप्त की थी। लेकिन भाजपा के साथ उनका गठबंधन और इस अतार्किक और असंवैधानिक कानून का समर्थन उन प्रतिबद्धताओं के खिलाफ जाता है।

कथित अशंकाओं के बारे में चर्चा भी इस फ़तवे में है। उसके अनुसार यदि वक़्फ़ संशोधन विधेयक, 2024 लागू हुआ तो यह शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला आश्रयों और धार्मिक स्थलों के लिए समर्पित सदियों पुराने वक्फ संस्थानों को नष्ट कर देगा। इससे मुस्लिम समुदाय और अधिक वंचित और गरीब हो जाएगा, जैसा कि सच्चर समिति की रिपोर्ट में पहले ही चेतावनी दी गई थी। आपकी सरकार द्वारा मुसलमानों की चिताओं की उपेक्षा ऐसे औपचारिक आयोजनों को अर्थहीन बना देती है।

विवादों में रहा है इमारत शरिया

इस संगठन की कोई विशेष पहचान गैर मुसलमानों के बीच नहीं थी लेकिन 15 अप्रैल, 2018 को इसने पटना के गांधी मैदान में एक बड़ी रैली कर सबको चौंका दिया था। यह रैली तीन तलाक के मुद्दे पर विरोध के लिए की गई थी और कहा गया था कि इस्लाम के कानून में बदलाव बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस रैली में बिहार के हजारों मुस्लिम इकट्ठा हुए थे।

इमारत शरिया मुसलमानों को कलमे की बुनियाद पर और शरीयत के तहत संगठित और अनुशासित करने के उद्देश्य से काम कर रहा है। यह संगठन आज से नहीं बल्कि आजादी के पहले साल 1921 से ही मुसलमानों को एकजुट करने के लिए कार्य कर रहा है। इसकी तीन प्रमुख कमेटियां हैं, जिसमें मजलिस-ए अरबाब-ए-हल्लोअक्द, मजलिस-ए-शूरा और मजलिस-ए-आमला शामिल हैं।

बिहार में नीतीश सरकार में मंत्री खुर्शीद अहमद के खिलाफ भी इस संगठन ने जुलाई, 2017 को एक फतवा जारी किया था। खुर्शीद अहमद के खिलाफ यह फतवा भी इमारत शरिया द्वारा जारी किया गया था। मंत्री ने 'जय श्रीराम' का नारा लगाया था, जिस कारण उनके खिलाफ फतवा जारी हुआ था।

संजीव कुमार

ये लोग पिपरासी प्रखंड में भी इसी प्रकार के प्रयास में थे लेकिन 17 मार्च को स्थानीय ग्रामीणों ने विरोध कर दिया। एक धर्म प्रचारक को खदेड़ कर भगा दिया। इसके बाद ग्रामीणों ने स्थानीय थाना और प्रशासन को मामले की सूचना दी...

झाड़-फूंक के नाम पर धर्म परिवर्तन का खेल

बिहार के मधुबनी प्रखंड के बाद पश्चिम चंपारण के पिपरासी प्रखंड में भी ईसाई मिशनरियों द्वारा लोगों को धर्मांतरण के लिए प्रेरित करने का खुलासा हुआ है। दवा और झाड़-फूँक के नाम पर लगातार इस प्रकार की कोशिश ईसाई मिशनरी करते रहते हैं। ये लोग पिपरासी प्रखंड में भी इसी प्रकार के प्रयास में थे लेकिन 17 मार्च को स्थानीय ग्रामीणों ने विरोध कर दिया। एक धर्म प्रचारक को खदेड़ कर भगा दिया। इसके बाद ग्रामीणों ने स्थानीय थाना और प्रशासन को मामले की सूचना दी।

इस गांव के रहने वाले मनोज यादव, ध्रुव यादव, सुनील कुमार और राजीव पाठक ने बताया कि उत्तर प्रदेश में धर्म परिवर्तन पर सख्त कानून लागू होने के कारण मिशनरी अब बिहार की सीमा से सटे इलाकों में सक्रिय हो रहे हैं। इसी क्रम में सबसे पहले मधुबनी प्रखंड के गोबरहिया गांव में बड़े पैमाने पर झाड़-फूंक और दवा के नाम पर धर्म परिवर्तन किया जाने लगा। अधिकारियों की मिलीभगत के कारण अब यह गतिविधियां पिपरासी प्रखंड तक फैल गई हैं।

पिपरासी प्रखंड के डुमरी मुड़ाडीह पंचायत के भरपटीया पाठक टोला गांव में हर सोमवार को इलाज और झाड़-फूंक के नाम पर स्थानीय लोगों को बहकाया जा रहा था और उन्हें ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा था। इसकी सूचना मिलने पर सोमवार को ग्रामीणों ने मौके पर पहुंचकर धर्म प्रचारकों को खदेड़ दिया।

प्रमुख प्रतिनिधि मुखिया जोखू बैठा ने बताया कि उन्हें भी इस मामले की शिकायत मिली है। उन्होंने अधिकारियों को सूचना देकर उचित कार्रवाई की मांग की है। वहीं, थानाध्यक्ष अशोक कुमार ने बताया कि धर्म प्रचारकों को थाने में उपस्थित होकर अपने कागजात दिखाने का निर्देश दिया गया है। साथ ही, इस बात की जांच की जा रही है कि क्या वास्तव में धर्म परिवर्तन कराया जा रहा था। प्रशासन मामले की गहराई से जांच कर रहा है।

19 वर्षीय एक दलित लड़की के साथ चार मुस्लिम लड़कों ने दुराचार किया था। यह घटना बेतिया के छावनी इलाके के पास वैष्णवी कॉलोनी की थी। पीड़िता अपने दोस्त के साथ वहाँ घूमने गई थी जहां दो मोटरसाइकिलों पर सवार चार लोगों ने लड़की के साथ जबरदस्ती की।

क्योंकि ये दलित मुस्लिम अत्याचार के शिकार थे

गोपालगंज में एक 80 वर्षीय दलित महिला के साथ कुछ मुल्लों ने सामूहिक बलात्कार किया। उन लोगो ने उसे इतना मारा कि वह बेहोश हो गई। महिला शाम के समय अपने जानवरों के लिए चारा काटने गई थी...

लोग चीख-चीख कर 'जय भीम, जय मीम' का नारा लगाते हैं अर्थात दलित मुस्लिम एकता की बात करते हैं लेकिन वास्तविकता कोसों दूर है।बिहार में 'जय भीम, जय मीम' का नारा लगाने वाले कुछ मामलों पर चुप्पी साध जाते हैं। जब इस भीम (दलित या वंचित वर्ग) के ऊपर मीम (मुस्लिम) का हमला होता है तो यह लोग चुप हो जाते हैं।

बिहार के मुसलमानों की नजर में दलित आज भी जानवरों से गए बीते हैं तभी तो वे उन्हें सियार और न जाने कितनी जातिवाचक संज्ञाओं से सम्बोधित करते हैं। इस वर्ष जब पूरी दुनिया होली की मस्ती में थी, उसी दिन शाम के समय बिहार के गोपालगंज में एक 80 वर्षीय दलित महिला के साथ कुछ मुल्लों ने सामूहिक बलात्कार किया। उन लोगो ने उसे इतना मारा कि वह बेहोश हो गई। महिला शाम के समय अपने जानवरों के लिए चारा काटने गई थी। जब पीड़िता का पुत्र नागेंद्र राम इस बात की शिकायत लेकर मुख्य आरोपी छोटे आलम के घर गया तो उसे छोटे आलम के घरवालों ने न सिर्फ मां बहन तथा जातिवाचक बातों को लेकर गाली दी बल्कि उनकी तुलना जानवरों से भी की।

यह घटना 14 मार्च की शाम बैकुंठपुर थाना के धर्मवारी गांव की है। इस संबंध में नागेंद्र राम ने बताया कि इनका समुदाय इन्हें हमेशा हिकारत की दृष्टि से देखता है। जबकि इस क्षेत्र में दलित हितों के बात करनेवाले संगठन भी हैं।

यह बिहार की कोई एक अकेली घटना नहीं है प्रतिवर्ष इस तरह की घटनाएं बिहार के अलग-अलग क्षेत्रों में होती है। गत वर्ष 26 नवंबर को बिहार के पश्चिमी चंपारण - बेतिया जिले में 19 वर्षीय एक दलित लड़की के साथ चार मुस्लिम लड़कों ने दुराचार किया था। यह घटना बेतिया के छावनी इलाके के पास वैष्णवी कॉलोनी की थी। पीड़िता अपने दोस्त के साथ वहाँ घूमने गई थी जहां दो मोटरसाइकिलों पर सवार चार लोगों ने लड़की के साथ जबरदस्ती की। इस संबंध में इरशाद कुरैशी(22), मोहम्मद शहजाद (26), बैतुल्लाह खान(28) और फरहान आलम(20) की गिरफ्तारी भी हुई थी। वर्ष 2024 में ही 22 अप्रैल को मोतिहारी के रक्सौल सीमा पर सीमा सुरक्षा बल के लोगों ने 26 वर्षीय समीर आलम को गिरफ्तार किया था। समीर आलम एक लड़की को नेपाल बेचने ले जा रहा था। लड़की नरकटियागंज की रहने वाली थी। समीर ने उसे जबरन अगवा किया और उसे निकाह धर्म परिवर्तन कराकर उसका निकाह किया और गुपचुप तरीके से उसे नेपाल ले जा रहा था। इसके पहले भी 11 मई, 2022 को उसने इसी प्रकार का कुकृत्य किया था और उसकी तलाशी चल रही थी। समीर के कार्य करने का तरीका केरल स्टोरी की तर्ज पर था। 2022 में ही 21 अक्टूबर को समस्तीपुर में एक दलित युवक से तालिबानी अदालत लगाकर थूक चटवाया गया था। युवक का गुनाह सिर्फ इतना था कि उसने एक मुस्लिम लड़की से प्रेम किया था। **संजीव कुमार**

वनों को बचाने और वन क्षेत्र बढ़ाने के लिए संकल्प लेने का समय आ गया है। जरुरत है कि अपने हाथों में एक पौधा थामें और उसे धरती में लगाएं तथा वनों की कटाई और क्षरण को रोकने के लिए प्रयास करें। वनों के संरक्षण के लिए प्रशासनिक प्रयासों के साथ ही जन भागीदारी बढ़ाना चाहिए...

वन दिवस के अवसर पर हुआ सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम

विश्व वन दिवस के अवसर पर ललन पांडेय सरस्वती विद्या मंदिर, शाहपुर, भोजपुर में वृक्षारोपण एवं ग्रंथ वितरण कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर पर्यावरणविद रमेश कुमार सुदामा ने कहा कि वन दिवस मनाने का उद्देश्य वनो का संरक्षण है। वनों के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए कार्य करना होगा। वनों के संरक्षण के लिए किए जानेवाले उपायों पर भी जोर देने की आवश्यकता है।

वनों को बचाने और वन क्षेत्र बढ़ाने के लिए संकल्प लेने का समय आ गया है। जरुरत है कि अपने हाथों में एक पौधा थामें और उसे धरती में लगाएं तथा वनों की कटाई और क्षरण को रोकने के लिए प्रयास करें। वनों के संरक्षण के लिए प्रशासनिक प्रयासों के साथ ही जन भागीदारी बढ़ाना चाहिए। सह प्रमुख नित्यानंद ओझा ने कहा कि वन दिवस के अवसर पर सबको वृक्षारोपण का संकल्प लेना होगा और अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर वनों को बढ़ाना होगा। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य अजित दुबे जी, विद्यालय के सह सचिव संजय पांडेय, पर्यावरण संरक्षण गतिविधि दक्षिण बिहार पेड़ उपक्रम के सह प्रमुख नित्यानंद ओझा, जिला जल उपक्रम प्रमुख कमलेश सिंह, जिला पेड़ उपक्रम प्रमुख मुकेश मिश्रा एवं विंध्याचल जायसवाल भी उपस्थित थे।

डाक टिकट

पता